आखिर तुम्हें कब मिलेगी आजादी / सतीश कंसल

दुनियां चाँद पे चली गई !
मंगल की छाती पर
नासा ने रोबोट उतार दिया!
शनि मंगल
सूर्यग्रहण- चन्द्रग्रहण के
हर रहस्य से पर्दा उठ गया !
मगर फिर भी तुम
ग्रह नक्षत्रों को
शनि मंगल को
जन्मकुंडली में देख -देख कर
काँप रहे हो !
अपना भविष्य सुधारने के लिए
बाबा बाबियों का रास्ता
नाप रहे हो!!

क्या इसी दिन के लिए तुमने
बीएससी एमएससी पीएचडी
की थी !
कि तुम पढ़े लिखे जाहिलों की
फौज में शामिल हो जाना !

क्या इसी दिन के लिए तुम
डॉक्टर इंजीनियर वकील - मजिस्ट्रेट या प्रोफेसर बने थे ?
कि बंगले पर
काली हांडी टांगना !
निम्बू मिर्ची टांगना !
और अपने उज्ज्वल भविष्य की भीख
किसी बाबा बाबी के दरबार में नाक रगड़ कर माँगना !!

देश आजाद हो गया !
दुनिया आजाद हो गई !
आखिर
कब मिलेगी तुम्हें आजादी!
मानसिक गुलामी से ???

बंद कमरे में तुम्हारी चोटी
कट जाती !
अँधेरे में अकेले में
तुम्हें भूत -प्रेत सताते हैं !
तुम्हें ही सारी दुनिया की
नजर लगती है !
डायन तो तुम्हारे
हर घर में
मौजूद है !!
तुम्हारे तंत्र मंत्र यंत्र
काम क्यों नहीं करते हैं !
रक्षा सूत्र तुम्हारी चोटी
क्यों नहीं बचाता है !
आखिर कब तक
तुम मानसिक गुलाम रहोगे !

क्या भारत
पुनः विश्व गुरु
तुम्हारे जैसे मनोरोगियों की
वजह से
कभी बन पाएगा ?
दुनिया रोज नए- नए आविष्कार कर रही है !
तुम हजारों साल पुरानी भाषा संस्कृति रीति रिवाजो की
वैज्ञानिक व्याख्या करने में
लगे हो !
कब तक शब्दों के साथ
बलात्कार करोगे ?
कब तक धोखे में रखोगे !
भारत की भोली भाली जनता को
हर सिद्धान्त हर आविष्कार को
शास्त्रों ऋषि मुनियों के
माथे मढ़ोगे !!

तुम्हारी समस्याएं लौकिक हैं
मगर हर समस्या का हल परलोक में नजर आता है !
संसार तुम्हारे लिए स्वप्नवत् है
माया है !
भगवान की लीला है
नाटक है ! भ्रम है !
आखिर तुम्हें इस सपने से कौन जगाए ?

जो जगाए वही
धर्मद्रोही देशद्रोही
जातिवादी या नास्तिक है ?
चारुवाक बुद्ध महावीर
कपिल कणाद गौतम
नागसेन अश्वघोष
कबीर नानक रविदास
ओशो फुले शाहू पेरियार
भीम भगतसिंह कोवूर
राहुल दयानन्द विवेकानंद
सबने विवेक जगाया !
मगर फिर भी तुम्हारा
विवेक नहीं जागा !

क्योंकि तुम विश्वगुरु के
अहंकार की
दारू पीकर
गरीबी अनपढ़ता लिंगभेद जातिभेद भाषाभेद क्षेत्रभेद
साम्प्रदायिकता
की नाली में पड़े हो !
आखिर तुम्हें कब मिलेगी
आजादी ?
मानसिक गुलामी से ????

स्वतंत्रता दिवस पर अंधविश्वास की परछाई

संजीव खुदशाह

यह प्रश्न अटपटा हो सकता है। लेकिन क्या आपको मालूम है कि 14 अगस्त को पाकिस्तान में आजादी का दिवस मनाया जाता है। इसके पीछे इतिहास में कुछ कहानियां छिपी हुई है। 1929 में तत्कालीन कांग्रेस के अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरु ने ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वराज की मांग की थी। उस समय 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के लिए चुना गया था। अंग्रेजों ने 14 अगस्त को भारत छोड़ने का निर्णय लिया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध (1935 से 1945) के बाद अंतर्राष्ट्रीय संधि के दबाव में ब्रिटिश संसद में लॉर्ड माउंटबेटन को 30 जून 1948 तक सत्ता का ट्रांसफर करने का अधिकार दिया था। सी राजगोपालचारी ने इस बारे में कहा था कि यदि वह जून 1948 तक इंतजार करते हैं तो ट्रांसफर करने के लिए कोई सत्ता ही नहीं बचेगी। इसीलिए 4 जुलाई 1947 को माउंटबेटन भारत को छोड़ने का बिल पेश किया। जिसे 15 दिन में ही पास कर दिया गया। जिसमें यह तय किया गया कि 15 अगस्त 1947 के पहले भारत छोड़ दिया जायेगा।

इस तरह 14 अगस्त 1947 कि बीती रात को भारत छोड़ने का निर्णय लिया गया। इसी समय भारत के दो टुकड़े हुए जिसका निर्णय काफी पहले लिया जा चुका था। और पाकिस्तान में उसी दिन अपने आप को आजाद कर लिया। लेकिन भारत में इस गुलामी से छुटकारा पाने के लिए डॉ राजेंद्र प्रसाद ने गोस्वामी गणेश दास महाराज के माध्यम से उज्जैन के ज्योतिष सूर्यनारायण व्यास को हवाई जहाज से दिल्ली बुलवाया और पंचांग देखकर आजादी का मुहूर्त निकलवाया।

पूरे संसार में यह बिरली घटना है जब किसी ने गुलामी की बेड़ियों को खोलने के लिए भी ज्योतिष, शुभ-अशुभ, मुहूर्त, अंधविश्वास का सहारा लिया और उसे 1 दिन और अपनी गुलामी में रहना पड़ा।

ज्योतिष पंडित सूर्यनारायण व्यास ने 14 तारीख के बजाय 15 तारीख की बीती रात को शुभ लग्न बताया। इस हिसाब से हम पाकिस्तान से 1 दिन छोटे हो गए। जो पंचांग बनाया गया उसमें यह बताया गया कि यदि 15 तारीख को आजाद होते हैं तो भारत में लोकतंत्र, सुख शांति और प्रगति बनी रहेगी। 75 वर्ष के भीतर भारत विश्व गुरु बनेगा। इतना ही नहीं, पं. व्यास के कहने पर ही स्वतंत्रता की घोषणा के तत्काल बाद देर रात ही संसद को धोया गया, बाद में बताए मुहूर्त के अनुसार गोस्वामी गिरधारीलाल ने संसद की शुद्धि भी करवाई।

यह प्रश्न उठता है कि क्या भारत पाकिस्तान से भी ज्यादा लोकतांत्रिक सुख शांति और प्रगति वाला देश है आइए इसका विश्लेषण करते हैं।

पहला भारत में जिस प्रकार से संप्रदायीक हत्याएं हो रही है। लिंचिंग जैसी घटनाएं हो रही है। दलित और ओबीसी तथा अल्पसंख्यको का दमन किया जा रहा है। इंसान को जानवर और जानवरों को माता का दर्जा दिया जा रहा है। इससे आप भारत में सांप्रदायिक और लोकतांत्रिक स्थिति का अंदाजा लगा सकते हैं।

पाकिस्तान पाकिस्तान में भी यह स्थिति भारत के समकक्ष हुई लगती है। वहां भी मारकाट क्षेत्रीयतावाद, महिलाओं का दमन चरम पर है। और भारत की तरह पड़ोसी देश को नीचा दिखाने के लिए सरकारें आमदा रहती हैं।

दूसरा न्याय व्यवस्था भारत की न्याय व्यवस्था आज बिगड़ी हालत में बदल चुकी है। कॉलोसियम परंपराओं में अयोग्य न्यायाधीशों का दबदबा कोर्ट में बढ़ गया है। ईमानदार न्याय प्रिय न्यायाधीशों को जान से हाथ धोना पड़ रहा है। और बेहद दबाव में यह काम करने के लिए मजबूर है।

वही पाकिस्तान में न्याय व्यवस्था कुछ मजबूती दिखाई पड़ती है। जहां पर पूर्व राष्ट्रपति को 1 घंटे खड़े रहने की सजा दी जाती है। तो दूसरी ओर पूर्व प्रधानमंत्री को पनामा केस में सजा दी जाती है। उसी पनामा केस की भारत में फाइलें बंद की जा चुकी है।

तीसरा भारत में जिस प्रकार से प्रेस मीडिया को दबाव में रखा जा रहा है और सोशल मीडिया को कंट्रोल किए जाने की कोशिश हो रही है। इससे नहीं लगता कि लोकतंत्र ज्यादा दिन नहीं टिक पाएगा।

वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान में गलत कामों के लिए मीडिया में अपने प्रधानमंत्री का मजाक बनाना एक आम बात होती है।

चौथा भारत में शिक्षा व्यवस्था बेहद खस्ता हाल में पहुंच चुकी है। हजारों स्कूलों को बंद किया जा चुका है। आठवीं तक बिना पढ़े पास होने का फरमान जारी है। ऐसी स्थिति में आप समझ सकते हैं कि आम भारतीय की शिक्षा की स्थिति क्या होगी ठीक यही स्थिति पाकिस्तान में भी है।

पांचवा गरीबी भारत में गरीबी और विकासशील देशों की सूची में काफी पीछे है। 5 जून 2016 जनसत्ता में छपी खबर के मुताबिक भारत को विकासशील देशों की सूची से हटाकर पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ कम इनकम वाली सूची में रखा गया है। इससे आप भारत की गरीबी का अंदाजा लगा सकते हैं।

यह चंद आंकड़े हैं जो यह बताने के लिए काफी है कि पंडित ज्योति सूर्यनारायण व्यास की भविष्यवाणी और उनका पंचांग कहां तक सही है।

रही बात भारत के विश्व गुरु बनने की तो शिक्षा की स्थिति के आधार पर यह कहना हास्यास्पद है। मुझे लगता था कि आज के समय में भारत अपनी अंधविश्वास से निजात पाएं और स्वयंभू विश्व गुरु बनने के दावा से बाहर निकलें।

यह यह प्रश्न मुंह बाए खड़ा है दुनिया की 100 सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय की सूची में हमारा एक ही विश्वविद्यालय शामिल क्यों नहीं है? दुनिया के अविष्कारों में भारत का एक भी अविष्कारक नहीं है।

हमें अपनी आत्ममुग्धता की बीमारी से निजात पाने की जरूरत है । तभी सही मायने में भारत आजाद कहलाएगा। नहीं तो गुलामी का एक दिन कई हजार सालों के बराबर होगा।

उमर खालिद पर जानलेवा हमले के लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार, मोदी-शाह पर रिहाई मंच ने उठाए सवाल

मज़दूर मोर्चा विशेष

एजेंसियां बताएं कि उमर पर किन आतंकियों ने किया हमला ? उत्तर प्रदेश के रिहाई मंच ने राजधानी दिल्ली में उमर खालिद पर हुए जानलेवा हमले के लिए भाजपा सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए मोदी और शाह पर सवाल उठाए। मंच ने घटना को आतंकी घटना करार देते हुए मांग की कि घटना कारित करने वालों का जिन संगठनों से सम्बन्ध है उनपर पाबन्दी लगाई जाए. गौरी लंकेश, कलबुर्गी, पानसरे, दाभोलकर की हत्या के लिए जिम्मेदार सनातन संस्था को जांच के दायरे में लाते हुए तत्काल पाबन्दी लगाई जाए।

रिहाई मंच अध्यक्ष मुहम्मद शुऐब ने कहा कि फर्जी मुठभेड़ों के आरोपों वाली मोदी-शाह की जोड़ी के राज में अब दिनदहाड़े हत्यारे गोली चला रहे हैं। उमर को देशद्रोही घोषित करने वाले भाजपा नेता इस हमले के लिए जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता दिवस पर पाँच आतंकी घुसने का एलर्ट जारी करने वाली एजेंसियां बताएं कि उमर पर किन आतंकियों ने हमला किया है।

हाफिज सईद के फर्जी ट्वीट पर प्रतिक्रया देने वाले गृह मंत्री राजनाथ सिंह बताएं कि संघ गिरोह के किन गुर्गों ने संसद से दो सौ मीटर की दूरी पर ये हमला किया, उनकी सुरक्षा-खुफिया एजेंसियां कहाँ आराम फरमा रहीं थी. जब दिल्ली पुलिस की मौजूदगी में संविधान जलाया जा रहा है तो क्या ऐसे में देश की संसद और स्वतंत्रता दिवस पर देश सुरक्षित है।

उन्होंने कहा कि कर्नल पुरोहित, प्रज्ञा ठाकुर जैसों को रिहा इसीलिए करवाया गया कि वो इस तरह की घटनाओं को अंजाम दें। आतंकी घटना को अंजाम देने की फिराक वाले सनातन संस्था के लोगों की गिरफ्तारी और उमर पर ये हमला साफ करता है कि तिरंगा यात्रा के नाम पर कासगंज में दंगा करवाने वाले देश में साम्प्रदायिक-आतंकी घटना करने की फिराक में हैं।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

चरित्रवान - धनवान बनो

आज के युग में हर अभिभावक अपने ब को उच्च शिक्षा देकर एक सफल व्यक्ति के रूप में देखना चाहते हैं। इस सफलता के लिए वे अपना सब कुछ त्याग देते हैं। सही मायने में देखा जाए तो हर अभिभावक अपने बच्चों को धनवान बनाना चाहते हैं। परन्तु बहुत कम अभिभावक है जो अपने बच्चे को चरित्रवान बनाने के लिए समय देते है।

आज जो समाज की दशा है वह सब इसी कारण है क्योंकि बच्चे केवल अपने उद्देश्य की पूर्ति को ही सर्वोपरि मानने लगे हैं उन्हें किसी के सुख-दुख से कोई अभिप्राय नहीं है। इसका क्या कारण है, इसका कारण है आजकल के बच्चों में आचार-विचार, व्यवहार इत्यादि का बोध कम होता जा रहा है क्योंकि संयुक्त परिवार रहे नहीं और विद्यालयों में भी गुरू शिष्य की परम्परा नहीं रही एवं अभिभावक एकल परिवार होने के कारण एवं व्यस्तता के कारण बच्चों के प्रति ज़्यादा संवेदनशील नहीं रहे हैं।

वह उन्हें समय नहीं देते लेकिन उसकी कमी पैसे से पूरी करते हैं। अध्यापक भी केवल पाठ्यक्रम तक ही सीमित रह गए हैं। नैतिकता एवं सिद्धान्तों की कमी होती जा रही है। परन्तु इससे निराश न हो कर, इसके मंथन करने की आवश्यकता है। हमें अपने बच्चों को धनवान बनाने के साथ-साथ चरित्रवान बनने की सीख देनी चाहिए। यह शिक्षा बाकी सभी शिक्षा से अधिक आवश्यक है। बच्चों को हर प्रकार की बातों से अवगत कराना चाहिए। वे जानें कि अपने उपर आए दुखों के क्षणों में वे किस प्रकार बुद्धि एवं विवेक के साथ उबर सकते हैं।

बच्चों में कठिनाइयों से उबरने की क्षमता हो वे अपना संतुलन न खोयें। प्राय: मुश्किल परिस्थिति में बच्चे अपना संतुलन खो बैठते हैं। या तो वे गलत राह पर निकल पड़ते हैं या फिर निराश हो कर बैठ जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में उन्हें एक उचित मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। इसके लिए अभिभावक उन्हें एक ऐसा वातावरण दें जो शुद्ध हो, जहाँ पर भाव शुद्ध होंगे वहाँ पर वातावरण अपने आप शुद्ध हो जाएंगे। यह सब भाव बचपन से ही बच्चों को देने चाहिए। विद्यार्थी के मन में अभिभावक एवं अध्यापक सात्विक भाव का संचारण करें। वे केवल स्वार्थ पूर्ति के लिए जीवन न जीएँ । एक बालक ही राष्ट्र का निर्माता होता है।